

# श्री कृष्ण ने कर्म भवित के साथ प्रकृति का संरक्षण करना सिखाया है-वंदना श्री

राष्ट्रीय नवाचार \* देवास

श्रीकृष्ण की लीलाओं में सबसे बड़ी गोवर्धन लीला है। इस लीला के पीछे अनेक उद्देश्य छिपे हुए हैं। श्री

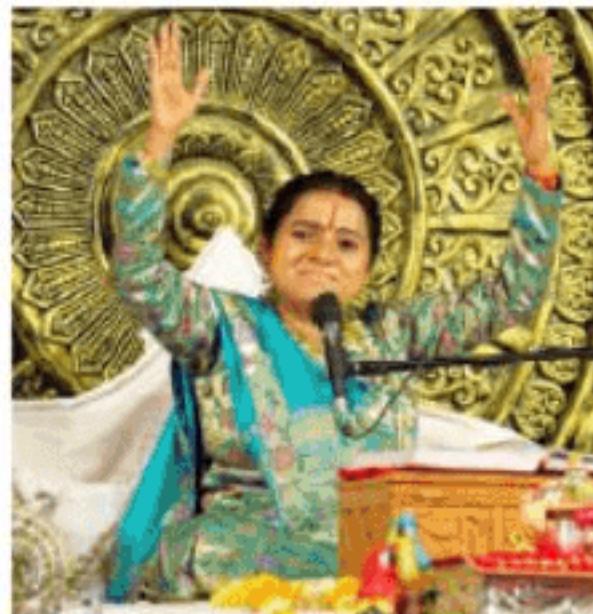


कृष्ण ने मनुष्य को प्रकृति से प्रेम करना सिखाया है। पृथ्वी पर प्रकृति सुदूर रहेगी तभी अच्छी वर्षा होगी। इसीलिए

श्री कृष्ण ने गोकुल वासियों से इन्द्र की पूजा बंद करवाकर गिरिराज की पूजा करवाई, क्योंकि गिरिराज प्रकृति का संरक्षण करते हैं। कथा में गोवर्धन की विविधता का चित्रण किया तथा दूर्य के माध्यम से गोवर्धन

की पूजा दिखाई। गो का एक अर्थ है इट्रिया अर्थात् इट्रियों का वर्धन करना, दूसरा अर्थ ज्ञान अर्थात् ज्ञान का संवर्धन करना। गो का एक अर्थ बुद्धि और स्वच्छता भी है। और गो का एक अर्थ प्रकृति भी है। इसीलिए गो अर्थात् गाय माता में समूचे देवताओं का वास भी माना जाता है। भगवान् कृष्ण ने

गोवर्धन लीला के माध्यम से मनुष्य को प्रकृति के साथ जीना सिखाया। यह शाश्वत विचार कैलादेवी मंदिर में हो रही श्रीमद भगवत् में बृज रत्न वंदना श्री ने व्यक्त करते हुए किये। कथा में गोवर्धन लीला के दूर्यमय वर्णन के साथ भगवान् गोवर्धन की मनमोहक झाँकी प्रस्तुत की गई साथ ही छप्पन भोग लगाया गया। लगाए हुए भोग को कलाकारों ने समस्त श्रोताओं को प्रसाद के रूप में दिया। कृष्ण लीला में चीरहरण का चित्रण करते हुए महिलाओं को नदी की मर्यादा के बारे में बताया। यह लीला में बृज के कलाकारों ने श्रोताओं का मन मोह लिया। श्रीकृष्ण की यह लीला का यह सुंदर दूर्य अद्भुत दिखाई दे रहा था, श्रोता मन मुआध हो गए थे, कृष्ण के मथुरा जाने का प्रसंग इतना मार्मिक था कि श्रोताओं की आँखों से अशुद्धारा बह गई। कथा में कंस वध, उद्धव के ज्ञान के अहंकार का मर्दन तथा कृष्ण का सादिप्नी आश्रम उज्जैन में विद्याअध्ययन का वर्णन किया गया। कथा में विशेष रूप से इंदौर के समाज



सेवी प्रेमचंद गोपल, खरणोन से विनोद मलाजन, सत्येन्द्र जोशी, महेश अग्रवाल, संघ के प्रमुख वैलाश चंद्रावत, दिनेश तजेरा, मोहन विश्वकर्मा, धनेन्द्रसिंह, कालूसिंह चौधरी, सुनुदलाल शर्मा, कैलाश मिश्रा, राजेश तिवारी, अनिलसिंह, अखिलेश सेंगर, जुड़ारिसिंह गठोर, वैश्य समाज से अशोक सोमानी,

